पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला के सीनेट हाल में आचार्य तुलसी मैमोरियल भाषण माला का प्रारम्भ व पंजाबी जैन लेखक बंधुओं का पद-अलंकरण का भव्य समारोह संपंन

(पटियाला) पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला के धार्मिक शिक्षा विभाग द्वारा अनुव्रत अनुशासता, युग प्रधान जैन आचार्य श्री तुलसी जी की स्मृति में एक भाषण माला का आयोजन जैन विश्व भारती लाडणूं के सहयोग से प्रारम्भ किया गया। इस अवसर पर विश्व में प्रथम जैन लेखक बंधुओं श्री पुरूषोत्तम जैन मण्डी गोबिन्दगढ़ व श्री रविन्द्र जैन मालेरकोटला का ''ज्वैल आफ जैन वर्ल्ड'' पद से अलंकृत किया गया।

सभा की अध्यक्षाता पंजाबी विश्वविद्यालय के उप-कुलपति डा. जसपाल सिंह जी ने की। मंच पर उप-प्रवर्तनी, जैन ज्योति साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की प्रमुख सुशिष्य शासन ज्योति साध्वी श्री सुधा जी महाराज अपनी शिष्य मण्डली सहित यूनिवर्सिटी के विशेष आग्रह से पधारी थीं। मंच का संचालन विभाग की अध्यक्षा डा. राजिन्द्र कौर रोही व यूनिर्विसिटी में जैन धर्म के लैक्चरार डा. प्रद्युमनशाह सिंह ने संयुक्त रूप से किया।

सर्वप्रथम डा. रोही ने पंजाबी के जैन लेखक बुंधओं का परिचय बाहर से पधारे हुए मेहमानों से करवाते हुए कहा कि हर्ष का विषय है कि आज पंजाबी यूनिवर्सिटी को पंजाबी के प्रथम जैन लेखक बंधुओं का सम्मान करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। इन्हें

यह सम्मान जैन वर्ल्ड फाउंडेशन अमेरिका के चेयरमैन श्री विनोद दरियापुरकर की ओर से भेजा गया है। इन्होंने पंजाबी भाषा के माध्यम से जैन धर्म की सेवा की है। आज यह यूनिवर्सिटी भी पंजाबी भाषा के प्रचार प्रसार के लिए सदैव अग्रसर रही है। हमें प्रसन्नता है कि लेखक बंधुओं की प्रेरका की सुशिष्या साध्वी श्री सुधा जी महाराज ने अपनी शिष्य मण्डली सहित पधार कर हमें अपना आशीर्वाद प्रदान किया है।

इस अवसर पर समणी डा. मंगल प्रज्ञा उप-कुलपति जैन विश्व भारती विश्वविद्याल लाडणूं ने जैन आचार्य श्री तुलसी भाषण माला का प्रथम लैक्चर दिया। उन्होंने अपने भाषण में फरमाया, ''आचार्य तुलसी एक युग पुरूष थे। आचार्य श्री ने राजस्थान के लाडणूं में जन्म लेकर मात्र ११ वर्ष की आयु में सन्यास ग्रहण किया। २२ वर्ष की छोटी सी आयु में उन्हें तेरा पंथ जैन समाज के लाखों अनुयायीओं का नेतृत्व करने का अवसर मिला। इस तरह वे सबसे कम आयु के आचार्य भी बन गए। आचार्य बनते ही उनका ध्यान समाज में फैली कुरीतियों की ओर गया। आचार्य श्री तुलसी ने नैतिकता पर ज्यादा बल दिया। उन्होंने फरमाया कि नैतिक व्यवित में धर्म स्वयं घटित हो जाता है। उन्होंने राष्ट्र को चरित्रवाण बनाने के लिए अनुव्रत आंदोलन प्रारम्भ किया। इस आंदोलन के माध्यम से उन्होंने भगवान महावीर का संदेश झोंपडी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक पहुंचाया। भारत के सभी राजनीतिज्ञों, बुद्धिजीवियों को उन्होंने अपनी विचारधारा से प्रभावित किया। राष्ट्र को चारित्रवाण बनाने के लिए उन्होंने १ लाख किलोमीटर की लम्बी लम्बी यात्राएं तक की।

उन्होंने कश्मीर से कन्याकुमारी तथा राजस्थान से असाम तक लम्बे लम्बे विहार किए। यही नहीं उन्होंने छुआछूत, जात-पात, घूंघट प्रथा, दहेज प्रथा, बाल विवाह, भ्रूण हत्या आदि सभी सामाजिक बुराईयों पर कठोर प्रहार किया। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य सम्पन्न किए। जैन साधुओं व साध्वियों की शिक्षा के प्रति उन्होंने विशेष ध्यान दिया। उनकी कृपा से अनेकों लोगों ने साधु जीवन व साध्वी जीवन ग्रहण किया। शिक्षा के क्षेत्र में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय लाडणूं उनकी प्रमुख देन है। जैन धर्म के प्रचार पसार के लिए उन्होंने क्रान्तिकारी कदम उठाए। विदेशों में जैन धर्म का प्रचार करने के लिए उन्होंने ''समणी वर्ग'' की स्थापना की जो पूरे विश्व में भगवान महावीर का संदेश पहुंचा रहे हैं। उन्होंने अणुव्रत के अतिरिक्त प्रेक्षा ध्यान व जीवन विज्ञान उनकी देन है। वे कवि, लेखक और आगमों के अच्छे जानकार थे। उन्होंने जैन आगमों पर शोध कार्य प्रारम्भ किया जो अभी तक चल रहा है।

इस अवसर पर जैन साध्वी डा. स्मृति जी ने कहा कि आचार्य दीपक के समान होते हैं। जैसे दीपक अंधकार को मिटा कर प्रकाश फैलाता है उसी प्रकार आचार्य अपने ज्ञान का प्रकाश चहुं ओर फैलाते हैं। आचार्य तुलसी जी का जीवन भी दीपक की भान्ति था। उन्होंने जैन धर्म की परस्पर एकता के लिए बहुत कार्य किया। वे छोटे बड़ों को सम्मान देते थे। वे अपने महान ज्ञान के कारण हम सब के पूजनीय बन गए। उन्होंने अपने ज्ञान द्वारा भारत को ही नहीं समस्त विश्व को प्रभावित किया। अनेकों देशों व विदेशों के नेता भी उनसे मार्ग दर्शन प्राप्त करने के लिए आते थे।

''आज एक नहीं खुशियों के दो मंगलमय अवसर हैं। एक आचार्य श्री की स्मृति में भाषण माला का आयोजन हो रहा है, दूसरा हमारी गुरूणी साध्वी श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज की प्रेरणा से ४० ग्रन्थों के प्रथम जैन पंजाबी लेखक बंधुओं का सम्मान जैन वर्ल्ड फाउंडेशन अमेरिका द्वारा हो रहा है। उन्हें ''ज्वैल आफ जैन वर्ल्ड'' पद से अलंकृत किया जा रहा है। यह हमारे लिए विशेष गर्व का विषय है कि दोनों लेखक बंधुओं ने हमारी गुरूणी श्री के दिशा निर्देश में १९७२ से यह कार्य प्रारम्भ किया था। इस कार्य में आचार्य श्री तुलसी का आशीर्वाद भी उन्हें मिलता रहा है। मैं पंजाबी विश्वविद्यालय का विशेष आभार प्रकट करती हूँ कि उन्होंने हमें इस समारोह में भाग लेने के लिए निमन्त्रण दिया और हम अपने भाईयों को सम्मानित होते हुए देख सके। मैं जैन वर्ल्ड फाउंडेशन अमेरिका के चेयरमैन श्री विनोद दरियापुरकर को साधुवाद देती हूँ कि उन्होंने दोनों जैन बंधुओं को सम्मानित करके पंजाबी भाषा के कार्य को और आगे बढ़ाने के लिए प्रेरणा दी है।

इसके बाद पंजाबी यूनिवर्सिटी के उप-कुलपति डा. जसपाल सिंह ने अपने कर कमलों से लेखक युगल को जैन वर्ल्ड फाउंडेशन अमेरिका द्वारा प्रेषित ट्राफियां प्रदान कीं। उन्होंने इस समागम के आयोजकों का आभार प्रकट करते हुए लेखक युगल को बधाई दी और आशा प्रकट की कि भविष्य में भी वे इसी प्रकार कार्य करते रहेंगे। उन्होंने आचार्य तुलसी के साथ अपनी भेंट का वर्णन विशेष रूप से किया।

इस अवसर पर श्री सुरिन्द्र मित्तल व श्रीमती लक्ष्मी मित्तल द्वारा जैन तेरापंथ समाज पंजाब की ओर से साध्वी श्री सुधा जी महाराज, दोनों लेखक बंधुओं, समणी डा. मंगलप्रज्ञ, डा. जसपाल सिंह, डा. श्रीमती राजिन्द्र कौर रोही व डा. प्रद्युम्मनशाह सिंह का शाल ओढ़ा कर सम्मान भी किया गया।

अंत में डा. प्रद्युम्मनशाह सिंह द्वारा सभी मेहमानों का धन्यवाद किया गया।